Bundelkhand Journal of Academic Research

निवेशकों के बीच जोखिम की धारणा और निवेश संबंधी फैसलों पर एक अध्ययन

डॉ. संतोष रानी

असिस्टेंट प्रोफेसर (वाणिज्य), वाणिज्य विभाग, बुन्देलखण्ड महाविद्यालय झाँसी, उत्तर प्रदेश।

(**Corresponding Author:** aman200329@gmail.com)

https://doi.org/10.5281/zenodo.23005885

सारांश

निवेशक जिस तरह से वित्तीय सम्पत्ति चुनते हैं, पैसे का बंटवारा करते हैं और बाजार की अस्थिरता पर प्रतिक्रिया देते हैं, उस जोखिम के बारे में उनकी सोच का बहुत प्रभाव पड़ता है। निवेश के फैसले शायद ही कभी सिर्फ उम्मीद के मुताबिक रिटर्न के आधार पर लिए जाते हैंय बल्कि, वे इस बात से भी तय होते हैं कि निवेशक संभावित नुकसान, उतार–चढ़ाव और अनिश्चितता का मानसिक रूप से कैसे आकलन करते हैं। यह लेख जोखिम की धारणा और निवेशक के निवेश फैसलों के बीच संबंध की जांच करता है, जिसमें इन्हें प्रभावित करने वाले व्यवहार संबंधी, जनसांख्यिकी और वित्तीय कारकों पर ध्यान दिया गया है। इस लेख में वित्तीय साक्षरता, उम्र, अनुभव और व्यवहार संबंधी पूर्वाग्रहों की भूमिकाओं पर प्रकाश डाला गया है, साथ ही पहले की गई ऐसी रिसर्च का भी हवाला दिया गया है जो जोखिम की धारणा और निवेश के फैसले लेने के बीच सकारात्मक संबंध दिखाती है। अध्ययन के अनुसार, जिन निवेशकों को जोखिम की बेहतर समझ होती है, उनके समझदारी भरे और अलग–अलग तरह के निवेश के फैसले लेने की संभावना अधिक होती है, लेकिन गलत धारणा वाले लोग या तो फायदेमंद मौकों से बच सकते हैं या बहुत ज्यादा जोखिम उठा सकते हैं। अध्ययन में पाया गया कि वित्तीय साक्षरता और जोखिम के बारे में जागरूकता बढ़ाने से निवेश की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है और लोगों व परिवारों के लिए बेहतर वित्तीय परिणाम मिल सकते हैं।

आलेख सूचना			
	प्राप्त: 29 अगस्त, 2026	**स्वीकृत:** 08 सितंबर, 2026	**प्रकाशित:** 30 सितंबर, 2026
	सारणी: 00	**चित्र एवं ग्राफ:** 00	**स्रोत एवं संदर्भ:** 14
	मुख्य शब्द:	निवेश धारणा, वित्तीय साक्षरता, वित्तीय जोखिम, अनिश्चितता, व्यावसायिक।	

1. परिचय एवं पृष्ठभूमि : व्यक्ति और संस्थाएँ कई तरह के वित्तीय काम करती हैं, जिनमें निवेश सबसे मुख्य है। हालाँकि, हर निवेश में कुछ न कुछ अनिश्चितता होती है, भले ही इसमें भविष्य में रिटर्न पाने की उम्मीद में अभी पैसा लगाना शामिल हो। निवेशकों को लगातार यह देखना चाहिए कि क्या निवेश के संभावित जोखिम, उससे मिलने वाले अनुमानित लाभ के हिसाब से सही हैं। इस कारण से, निवेश के फैसले जोखिम को समझने के नजरिए से मनोवैज्ञानिक और व्यवहारिक रूप से काफी प्रभावित होते हैं। निवेश के विकल्पों पर विचार करते समय, निवेशक जोखिम को कैसे समझते हैं, इससे वे नुकसान की संभावना, बाजार में अस्थिरता और अनजान प्रभावो का विश्लेषण करते हैं। इसके बजाय, यह व्यक्तिगत मान्यताओं, भावनाओं, अनुभव और शिक्षा से प्रभावित होता है, और हमेशा असल जोखिम जैसा नहीं होता। चूँकि वे किसी सम्पत्ती के जोखिम को अलग–अलग तरह से देखते हैं, इसलिए वित्तीय बाजारों में दो निवेशक एक ही सम्पती का सामना कर सकते हैं लेकिन अलग–अलग तरह से प्रतिक्रिया दे सकते हैं। एक निवेशक किसी स्टॉक को जोखिम भरा निवेश मान सकता है, जबकि दूसरा उसे विकास का मौका मान सकता है। ये अंतर एसेट एलोकेशन, पोर्टफोलियो डाइवर्सिफिकेशन और म्यूचुअल फंड, बॉन्ड, इंश्योरेंस प्रोडक्ट, इक्विटी और अन्य विकल्पों में निवेश करने की इच्छा को प्रभावित करते हैं। रिसर्च के अनुसार, जोखिम सहने की क्षमता, अति–आत्मविश्वास, भेड़–चाल वाली मानसिकता और वित्तीय तनाव–जो संज्ञानात्मक और भावनात्मक कारक हैं– तार्किक विश्लेषण के अलावा निवेश के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। इसलिए, निवेशकों के निवेश विकल्पों को समझने के लिए उनके जोखिम को समझने के नजरिए को समझना जरूरी है। यह रिसर्च निवेशकों के जोखिम को समझने के नजरिए और निवेश के बारे में उनके विकल्पों के बीच संबंध की जाँच करती है। इसके अलावा, यह पता लगाती है कि वित्तीय साक्षरता और जनसांख्यिकीय कारक इस संबंध को कैसे प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन इस

आधार पर है कि निवेशक बिना सोचे–समझे फैसले नहीं लेतेय बल्कि, वे जानकारी को अपने मानसिक मॉडल के जरिए फिल्टर करते हैं, जिनका वित्तीय प्रदर्शन पर काफी असर पड़ता है।

1.1. जोखिम की धारणा की अवधारणाः किसी संभावित नुकसान की गंभीरता और उसकी संभावना के बारे में किसी व्यक्ति की अपनी समझ को 'रिस्क परसेप्शन' (जोखिम के प्रति धारणा) कहा जाता है। यह बताता है कि निवेश के मामलों में कोई निवेशक किसी वित्तीय सम्पत्ति को कितना जोखिम भरा या अनिश्चित मानता है। बाजार की घटनाएं, मीडिया कवरेज, निजी अनुभव, पहले हुआ मुनाफा या नुकसान, और साथियों या वित्तीय सलाहकार की सलाह दृ ये सभी इस धारणा पर असर डाल सकते हैं। इसलिए, यह आधिकारिक जोखिम मूल्यांकन से कहीं ज्यादा व्यापक है, जो प्रोबेबिलिटी डिस्ट्रीब्यूशन या स्टैटिस्टिकल वोलैटिलिटी पर निर्भर करता है। रिस्क परसेप्शन का एक अहम पहलू यह है कि यह हर व्यक्ति के लिए अलग–अलग होता है। जहां कुछ निवेशक ज्यादा मुनाफे के लिए जोखिम उठाने को तैयार रहते हैं, वहीं कुछ निवेशक स्वभाव से ही जोखिम से बचने वाले होते हैं। बिहेवियरल फाइनेंस के अनुसार, निवेशक हमेशा पूरी तरह से सोच–समझकर और तर्कपूर्ण तरीके से फैसले नहीं लेते हैं। इसके बजाय, अनिश्चितता का आकलन करते समय वे अक्सर 'ह्यूरिस्टिक्स' (अनुभव–आधारित नियम) और भावनात्मक मूल्यांकन का सहारा लेते हैं। बिहेवियरल बायस (व्यवहार संबंधी पूर्वाग्रह) पर हुई रिसर्च के अनुसार, ओवरकॉन्फिडेंस (अत्यधिक आत्मविश्वास), डिस्पोजिशन इफेक्ट, ब्लू–चिप बायस और हर्डिंग (भीड़–चाल) जैसे कारक इस बात पर असर डाल सकते हैं कि लोग जोखिम को कैसे देखते हैं और उस पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। अनुभव और जानकारी के साथ रिस्क परसेप्शन भी बदलता रहता है। जिन निवेशकों को बाजार के व्यवहार की गहरी समझ होती है, वे अक्सर लॉन्ग–टर्म रिस्क और शॉर्ट–टर्म वोलैटिलिटी के बीच अंतर कर पाते हैं। इसके विपरीत, कम जानकारी वाले निवेशक बाजार में होने वाले शॉर्ट–टर्म बदलावों पर बहुत ज्यादा प्रतिक्रिया दे सकते हैं। हालिया रिसर्च से पता चलता है कि वित्तीय साक्षरता का निवेश के व्यवहार और रिस्क परसेप्शन पर सकारात्मक असर पड़ता हैय इसका मतलब है कि ज्यादा जानकारी रखने वाले निवेशक अवसरों का आकलन करने और भरोसे के साथ कदम उठाने के लिए बेहतर ढंग से तैयार होते हैं।

1.2. निवेश निर्णय प्रक्रियाः निवेश का फैसला लेते समय व्यक्तिगत लक्ष्यों, संभावित रिटर्न, जोखिम, लिक्विडिटी और समय–सीमा जैसी बातों पर ध्यान दिया जाता है। आम तौर पर, निवेशकों के पास दो विकल्प होते हैं या तो कम जोखिम वाली संपत्तियां जैसे फिक्स्ड डिपॉजिट, डेट फंड और सरकारी सिक्योरिटीज, या फिर ज्यादा जोखिम वाले निवेश जैसे इक्विटी, डेरिवेटिव और सेक्टर–स्पेसिफिक म्यूचुअल फंड। फैसला लेने की प्रक्रिया में आर्थिक और मनोवैज्ञानिक, दोनों तरह के कारकों की भूमिका होती है। हालांकि क्लासिकल फाइनेंस में तर्कसंगत फैसलों को आधार माना जाता है, लेकिन असल दुनिया में निवेशकों का व्यवहार दिखाता है कि वे अक्सर अपनी निजी सोच और भावनाओं के आधार पर फैसले लेते हैं। फैसला लेने की प्रक्रिया आम तौर पर वित्तीय लक्ष्य तय करने से शुरू होती है। निवेशक कई वजहों से पैसे बचाना या निवेश करना चाह सकता है, जैसे रिटायरमेंट, शिक्षा, संपत्ति बनाना या छोटी अवधि की जरूरतों को पूरा करना। इसके बाद निवेशक संभावनाओं का आकलन करता है और उनके जोखिम और फायदों का अंदाजा लगाता है। इस चरण में जोखिम को समझने का नजरिया (रिस्क परसेप्शन) बहुत अहम होता है, क्योंकि इसी से तय होता है कि निवेशक किसी निवेश के साधन को सही मानता है या जोखिम भरा। अगर निवेशक जोखिम का आकलन बहुत ज्यादा करता है, तो हो सकता है कि वह एक फायदेमंद मौके को छोड़ दे। वहीं, अगर जोखिम का आकलन कम किया जाए, तो निवेशक को नुकसान हो सकता है और वह जरूरत से ज्यादा जोखिम उठा सकता है। भारतीय निवेशकों पर की गई एक स्टडी के मुताबिक, जोखिम को समझने का नजरिया निवेश के विकल्पों पर काफी असर डालता है, खासकर म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार में। इसके अलावा, कर्नाटक में रिटेल निवेशकों पर की गई एक स्टडी में निवेश के व्यवहार और जोखिम को समझने के नजरिए के बीच एक मजबूत सकारात्मक संबंध पाया गया। इससे पता चलता है कि जोखिम के बारे में बेहतर जानकारी होने से ज्यादा सक्रिय और समझदारी भरे फैसले लेने में मदद मिलती है। इसलिए, निवेश के विकल्प सिर्फ मुनाफे पर आधारित नहीं होते, वे जोखिम के बारे में निवेशक के अपने आकलन से भी तय होते हैं।

2. साहित्य समीक्षा : पिछली स्टडीज से पता चला है कि इन्वेस्टमेंट के फैसलों में रिस्क की समझ (Risk Perception) एक अहम हिस्सा है। केरल में इन्वेस्टर्स पर की गई एक स्टडी में म्यूचुअल फंड में रिस्क की समझ और इन्वेस्टमेंट के फैसलों के बीच एक अच्छा संबंध पाया गया। स्टडी से यह भी पता चला कि इन्वेस्टमेंट के फैसलों में रिस्क की समझ ने अहम भूमिका निभाई। भारतीय स्टॉक एक्सचेंज के इन्वेस्टर्स पर की गई एक और स्टडी में पाया गया कि रिस्क की समझ और रिस्क लेने की क्षमता (appetite) का इन्वेस्टमेंट के विकल्पों पर काफी असर पड़ता हैय जिन लोगों को ज्यादा रिस्क का एहसास होता है, वे ज्यादा रिस्क वाले एसेट्स में ज्यादा दिलचस्पी दिखाते हैं। हाल की स्टडीज ने व्यवहार से जुड़े पहलुओं (behavioral variables) को ध्यान में रखकर इस जानकारी को और बेहतर बनाया है। एक स्टडी में पाया गया कि इन्वेस्टर के फैसला लेने और व्यवहार से जुड़ी पूर्वाग्रहों (behavioral biases) – खासकर ब्लू–चिप स्टॉक्स को पसंद करने के मामले में– के बीच के संबंध पर रिस्क की समझ का असर पड़ता है। सऊदी इक्विटी मार्केट में बिहेवियरल फाइनेंस पर हुई एक और रिसर्च के अनुसार, ज्यादा आत्मविश्वास (overconfidence) का इन्वेस्टमेंट के फैसलों पर सीधा असर पड़ा, जबकि झुंड में चलने की प्रवृत्ति

(herding behavior), डिस्पोजिशन इफेक्ट और ब्लू–चिप बायस का रिस्क की समझ पर काफी सकारात्मक असर पड़ा। इसका मतलब है कि रिस्क की समझ अकेले नहीं होती, बल्कि यह एक बड़े मनोवैज्ञानिक ढांचे का हिस्सा होती है। एक और अहम पहलू है वित्तीय जागरूकता। 2025 की एक स्टडी के अनुसार, रिस्क की समझ और वित्तीय साक्षरता का निवेश के इरादों पर फायदेमंद असर पड़ा, और निवेश के इरादे से असल निवेश व्यवहार का पता चला। इसके अलावा, कर्नाटक के रिटेल इन्वेस्टर्स पर 2026 की एक स्टडी में पाया गया कि उम्र और वित्तीय साक्षरता का जोखिम की समझ पर काफी असर पड़ा, जबकि जेंडर और एजुकेशनल बैकग्राउंड का कोई असर नहीं पड़ा। ये नतीजे इस बात की पुष्टि करते हैं कि शिक्षा और जानकारी, अनिश्चितता के बारे में इन्वेस्टर्स की समझ को बेहतर बनाकर इन्वेस्टमेंट के फैसलों की गुणवत्ता को बढ़ाती हैं।

3. जोखिम की धारणा और निवेश के फैसलों के बीच संबंध : निवेश के फैसलों और जोखिम को समझने के नजरिए के बीच एक जटिल और अक्सर दोतरफा रिश्ता होता है। उदाहरण के लिए, जो निवेशक ज़्यादा जोखिम को समझते हैं, वे शायद ऐसी संपत्तियों में निवेश न करें जिनमें उतार–चढ़ाव की संभावना हो। हालाँकि, जोखिम की व्यावहारिक समझ से फैसले लेने में ज़्यादा सावधानी बरती जा सकती है और बेहतर डाइवर्सिफिकेशन (विविधीकरण) किया जा सकता है। जब निवेशकों को पता होता है कि अनिश्चितता को कैसे संभालना है, तो वे बाजार में सक्रिय रूप से हिस्सा ले सकते हैं, इसका मतलब है कि जोखिम का आकलन करने का मतलब सिर्फ सावधानी बरतना नहीं है। कई मामलों में, जोखिम की ज़्यादा समझ होने के कारण निवेशक सुरक्षित संपत्तियों जैसे कि फिक्स्ड–इनकम इंस्ट्रूमेंट्स, इंश्योरेंस–लिंक्ड प्रोडक्ट्स या डाइवर्सिफाइड म्यूचुअल फंड को प्राथमिकता देते हैं। फिर भी, कुछ निवेशक जिनमें जोखिम सहने की क्षमता ज़्यादा होती है, वे स्टॉक में पैसा लगाना चुन सकते हैं, अगर उन्हें लगता है कि संभावित रिटर्न अनिश्चितता से ज़्यादा है। अध्ययनों से पता चलता है कि जिन निवेशकों को जोखिम की ज़्यादा समझ होती है, उनके रणनीतिक पोर्टफोलियो फैसले लेने और जोखिम प्रबंधन के लिए डाइवर्सिफिकेशन का इस्तेमाल करने की संभावना ज़्यादा होती है। डाइवर्सिफिकेशन अनसिस्टमैटिक रिस्क (अव्यवस्थित जोखिम) के प्रति जोखिम को कम करता है और लंबे समय के मुनाफे में स्थिरता लाता है, जिससे यह महत्वपूर्ण हो जाता है। इसके अलावा, जोखिम की गलत समझ निवेश की गुणवत्ता को कम कर सकती है। जोखिम को कम आंकने से ओवरएक्सपोजर और नुकसान हो सकता है, लेकिन जोखिम को ज़्यादा आंकने से निवेशक संभावनाओं को नजरअंदाज कर सकते हैं। व्यवहार संबंधी पूर्वाग्रह अक्सर इन गलतियों को और बढ़ा देते हैं। उदाहरण के लिए, ज़्यादा आत्मविश्वास निवेशकों को चेतावनी के संकेतों (रेड फ्लैग्स) को नजरअंदाज करने के लिए प्रेरित कर सकता है, जबकि 'हर्डिंग' (भीड़–चाल) उन्हें भीड़ के व्यवहार का पालन करने के लिए मजबूर कर सकती है। इस प्रकार, निवेश की गुणवत्ता न केवल जोखिम की समझ के होने से तय होती है, बल्कि इस बात से भी तय होती है कि वह समझ असलियत से कितनी सटीक रूप से मेल खाती है।

4. जोखिम की धारणा को प्रभावित करने वाले कारक : निवेशकों की जोखिम को लेकर सोच कई चीजों से प्रभावित होती है। इनमें सबसे अहम है फाइनेंशियल लिटरेसी (वित्तीय समझ), क्योंकि यह निवेशकों को संभावनाओं को समझने, अलग–अलग निवेश विकल्पों की तुलना करने और वित्तीय जानकारी को समझने में मदद करती है। आम तौर पर, ज्यादा जानकारी रखने वाले निवेशक निवेश के विकल्पों का आकलन करते समय ज्यादा आत्मविश्वास दिखाते हैं। हालांकि व्यावहारिक वित्तीय अनुभव से जोखिम का आकलन बेहतर होता है, लेकिन सिर्फ शिक्षा ही काफी नहीं हो सकती। इसके अलावा, उम्र और अनुभव भी मायने रखते हैं। ज्यादा उम्र या ज्यादा अनुभवी निवेशकों ने बाजार के उतार–चढ़ाव, महंगाई का दबाव और निवेश में नुकसान का अनुभव किया हो सकता है, जो भविष्य में उनके फैसलों को प्रभावित करता है। कर्नाटक की स्टडी से पता चला कि जोखिम को लेकर सोच उम्र से काफी प्रभावित होती है, जिससे पता चलता है कि जीवन के पड़ाव और निवेश का इतिहास अहम कारक हैं। पिछले नतीजों के आधार पर, अनुभव सावधानी बढ़ा सकता है या आत्मविश्वास बढ़ा सकता है। इसके अलावा, व्यवहार से जुड़ी पूर्वाग्रह भी सोच को प्रभावित करते हैं। 'डिस्पोजिशन इफेक्ट' से प्रभावित लोग नुकसान वाले निवेश को बहुत लंबे समय तक बनाए रख सकते हैं, लेकिन 'हर्डिंग बिहेवियर' (भीड़–चाल) से प्रभावित निवेशक तब कम अनिश्चितता महसूस कर सकते हैं जब दूसरे लोग खरीदारी कर रहे हों। ज्यादा आत्मविश्वास के कारण निवेशक असल खतरों को नजरअंदाज कर सकते हैं, और 'ब्लू–चिप बायस' उन्हें यह मानने के लिए प्रेरित कर सकता है कि अच्छी तरह से स्थापित कंपनियाँ असल में जितनी सुरक्षित हैं, उससे कहीं ज़्यादा सुरक्षित हैं। ये मनोवैज्ञानिक झुकाव दिखाते हैं कि जोखिम का आकलन पूरी तरह से तार्किक नहीं होता है।

5. सलाहकारों और निवेशकों के लिए संभावित परिणाम : जोखिम पर हुई रिसर्च के असल दुनिया में बड़े असर होते हैं। लोग अपनी व्यक्तिगत जोखिम–सोच को समझकर एसेट एलोकेशन, पोर्टफोलियो बनाने और लंबे समय की वेल्थ प्लानिंग को बेहतर बना सकते हैं। निवेशकों को संभावित मुनाफे के अलावा अनिश्चितता के प्रति अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का भी आकलन करना चाहिए। इस तरह, वे ज्यादा सही फैसले ले सकते हैं और बाजार के उतार–चढ़ाव पर जरूरत से ज्यादा प्रतिक्रिया देने से बच सकते हैं। सही प्रोडक्ट सुझाने के लिए फाइनेंशियल सलाहकारों के लिए क्लाइंट की जोखिम–सोच को समझना जरूरी है। सलाहकारों को व्यक्ति परक नजरिए और

वस्तुनिष्ठ वित्तीय क्षमता दोनों की जाँच करनी चाहिए क्योंकि क्लाइंट की बताई गई जोखिम सहने की क्षमता दबाव में उनके असल व्यवहार से अलग हो सकती है। निवेशक के लक्ष्य, समय–सीमा और भावनात्मक आराम का स्तर, सभी अच्छे निवेश सुझाव के अनुरूप होने चाहिए। इससे वित्तीय योजनाओं के प्रति समर्पण बेहतर हो सकता है और असंतोष कम हो सकता है। वित्तीय संस्थानों और नीति–निर्माताओं के लिए, ये नतीजे निवेशक शिक्षा कार्यक्रमों की जरूरत को उजागर करते हैं। लोग वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों के जरिए कंपाउंड ग्रोथ, डाइवर्सिफिकेशन, महंगाई के जोखिम और जोखिम व इनाम के बीच संतुलन के बारे में सीख सकते हैं। चूँकि रिसर्च से पता चलता है कि वित्तीय साक्षरता जोखिम के आकलन और निवेश के व्यवहार को बेहतर बनाती है, इसलिए सार्वजनिक शिक्षा बाजार में भागीदारी और वित्तीय भलाई को बेहतर बना सकती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव : प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है है कि निवेशकों के निवेश के फैसलों पर उनके जोखिम को देखने के नजरिए का काफी असर पड़ता है। यह लोगों के निवेश के फैसलों, निवेश के साधनों के चुनाव और बाजार की अनिश्चितता पर उनकी प्रतिक्रिया को प्रभावित करता है। अध्ययन के अनुसार, वित्तीय साक्षरता, उम्र, अनुभव और व्यवहार से जुड़ी सोच– ये सभी इस बात पर असर डालते हैं कि जोखिम को देखने का नजरिया निवेश के व्यवहार से कैसे जुड़ा है। जिन लोगों को जोखिम का सही अंदाजा होता है, वे समझदारी से अलग–अलग तरह के निवेश (डाइवर्सिफिकेशन) करते हैं और सोच–समझकर फैसले लेते हैं, जबकि गलत नजरिया रखने वाले लोग या तो मौकों को छोड़ देते हैं या फिर खतरनाक जोखिम उठा लेते हैं। यह स्टडी इस पर भी जोर देती है कि निवेश का व्यवहार सिर्फ समझदारी भरे हिसाब–किताब से तय नहीं होता। जरूरत से ज्यादा आत्मविश्वास, भीड़–चाल (हर्डिंग) और 'डिस्पोजिशन इफेक्ट' (मुनाफे वाले शेयर जल्दी बेचना और नुकसान वाले शेयर बनाए रखना) जैसे कुछ मनोवैज्ञानिक कारक निवेशकों के अनिश्चितता को देखने और बाजार में उनके व्यवहार को बदल सकते हैं। इसलिए, बेहतर निवेश फैसले लेने के लिए वित्तीय साक्षरता और व्यवहार के बारे में जानकारी होना जरूरी है। आम निवेशक असल जिंदगी में निवेशक शिक्षा और अपनी जरूरतों के हिसाब से सलाह देने वाली सेवाओं का इस्तेमाल करके मजबूत और मुश्किल हालात का सामना करने वाले पोर्टफोलियो बना सकते हैं। कुल मिलाकर, निवेशक अपना पैसा कैसे और कहाँ निवेश करते हैं, यह तय करने में जोखिम को देखने के नजरिए को एक बुनियादी बात माना जाना चाहिए।

स्रोत एवं संदर्भ :

1. Bhattacharjee, S. (2021). Risk perception in respect of equity shares: A review of investor behaviour and investment decisions. Journal of Financial Studies, 12(3), 45–58.
2. Bairagi, S., & Chakraborty, D. (2022). Influence of risk perception on retail investors' decisionmaking behaviour in the stock market. International Journal of Management and Finance, 14(2), 102–118.
3. Ahmad, R., & Shah, M. (2023). Behavioural biases and investment decision-making among retail investors. Journal of Behavioural Finance, 18(2), 67–82.
4. Kumar, P., & Rani, S. (2023). Financial literacy and risk perception: Evidence from individual investors. International Journal of Financial Research, 15(1), 89–103.
5. Singh, A., & Verma, R. (2024). Demographic factors and risk-taking behaviour in stock market investments. Journal of Investment Management, 20(1), 54–70.
6. Chen, Y., & Lee, H. (2024). Market volatility and investor risk perception: An empirical analysis. Finance and Economics Review, 16(4), 112–128.
7. Yan, Z. (2025). Behavioural factors influencing risk perception and financial decision-making among investors. Journal of Behavioural Economics and Finance, 9(1), 15–30.
8. Rubilar-Torrealba, R. (2025). Risk Perception and Risky Asset Allocation: Evidence from investor behaviour studies. Finance Research Letters, 31, 100–112.
9. Sharma, N., & Gupta, V. (2025). Investor confidence and stock market participation: The moderating role of risk perception. International Journal of Finance and Banking Studies, 11(2), 74– 91.
10. Institute of Chartered Accountants of India. (2024). Background material on GST. ICAI.
11. GST Council. (2024). Goods and Services Tax: Information and resources. Government of India.
12. Ernst & Young. (2024). GST developments and business implications in India. EY.
13. Mediating role of risk perception between behavioral biases and investor's investment decisions. (2022). SAGE.
14. Bansal, A. & Jain, R. (2021). Digital accounting and GST compliance among small businesses. Journal of Accounting and Finance, 15(2), 112–121.

=====

आलेख उद्धरित करें :	रानी, डॉ. संतोष (2026)। निवेशकों के बीच जोखिम की धारणा और निवेश संबंधी फैसलों पर एक अध्ययन। बुंदेलखंड जर्नल ऑफ अकादमिक रिसर्च (बीजेएआर), वॉल्यूम–2, अंक–3, जुलाई–सितंबर, 2026, पृष्ठ 75–78। https://doi.org/10.5281/zenodo.23005885